अपराधी कौन?

लड़के चुप्पी साधे चारों ओर खड़े थे। "शायद वे निकलें ही न," सेन्या बोब्रोव बोला। "क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है?"

मीश्का ने कन्धे उचका दिए, "मैं कैसे बता सकता हूँ? मैं कोई मुर्गी तो हूँ नहीं! चूज़े निकलने के बारे में मैं क्या जानूँ?"

हर कोई एक साथ बोलने लगा। किसी ने कहा, चूज़े निकलेंगे ही नहीं। किसी ने कहा वे अभी भी निकल सकते हैं, तो दूसरों ने कहा कि या तो वे निकलेंगे या नहीं निकलेंगे। आखिर वीत्या स्मिर्नोव ने सारी बहस बन्द कर दी।

"अभी कोई पक्की बात कहना कठिन है," वह बोला। "दिन अभी पूरा नहीं हुआ है। हमें पहले जैसे ही काम जारी रखना चाहिए। अब ड्यूटी वालें लड़कों को छोड़कर सब अपने-अपने घर चले जाएँ।"

लड़के घर चले गए। मीश्का और मैं अकेले रह गए। हमने अण्डों पर फिर एक नजर डाली। ताकि अगर कहीं एकाध छोटी-सी दरार हो तो दिखाई दे जाए, लेकिन कुछ भी नहीं दिखाई दिया। मीश्का ने ढक्कन बन्द कर दिया।

"ठीक है, मुझे कोई परवाह नहीं कि क्या होता है! वैसे भी अभी से परेशान होना ठीक नहीं। शाम तक हम इन्तज़ार करेंगे और अगर तब भी कुछ न हुआ, तो फिर हम चिन्ता करना शुरू कर सकते हैं।"

हमने निश्चय किया कि हम ज़रा भी फिक्र नहीं करेंगे और शान्ति से इन्तज़ार करेंगे। लेकिन ऐसा कहना करने से आसान था। कितनी ही कोशिश करने पर भी हम चिन्ता किए बिना न रह सके और हर दस मिनट बाद हम इनक्युबेटर में झाँकते रहे। दूसरे लड़कों को भी चिन्ता थी। वे पूछने के लिए आते ही रहे। हर किसी का एक ही प्रश्न था, "क्यों, कैसा चल रहा है?"

कुछ समय बाद मीश्का ने उत्तर देना छोड़ दिया और सिर्फ कन्धे उचकाना शुरू कर दिया। लेकिन उसको इतनी बार कन्धों को उचकाना पड़ा कि शाम तक वे चढ़कर उसके कानों तक आ गए।

शाम बीतने के साथ लड़कों का आना भी बन्द हो गया। वीत्या ही सबके बाद आया। बहुत देर तक वह हमारे साथ बैठा।

"कहीं तुमसे हिसाब में गलती तो नहीं हो गई?" वह बोला।

हमने फिर से गिनना शुरू किया, लेकिन उसमें कहीं कोई गलती नहीं थी। यह इक्कीसवाँ दिन था और वह भी अब ढलने लगा था, लेकिन चूज़ा एक भी न निकला था।

"कोई बात नहीं," वीत्या ने हमें दिलासा देने के लिए कहा। "हम सबेरे तक इन्तज़ार कर लेंगे। वे शायद रात भर में निकल आएँ।"

मैंने अपनी माँ से मीश्का के यहाँ रहने की अनुमति ले ली। हमने सारी रात बैठने तथा निगरानी करने का निश्चय किया। हम इनक्युबेटर के पास बहुत देर तक चुपचाप बैठे रहे। बोलने के लिए अब कुछ नहीं रह गया था। अब हम ख्याली पुलाव भी नहीं पका सकते थे, हमारी सारी आशाएँ टूट चुकी थीं। जल्दी ही ट्रामें बन्द हो गईं और सब ओर सन्नाटा छा गया। खिड़की से दिखने वाला सड़क का लैम्प भी बुझ गया। मैं सोफे पर लेट गया। मीश्का कुर्सी पर बैठा-बैठा ऊँघ रहा था। एक बार तो वह लगभग गिर ही पड़ा, इसलिए वह आकर सोफे पर ही मेरे पास लेट गया और हम सो गए।

जब हम जागे तो दिन निकल चुका था और हर चीज़ पहले जैसी थी। इनक्युबेटर में अण्डे वैसे के वैसे पड़े हुए थे। न किसी में कोई दरार आयी थी और न किसी से कोई आवाज़ ही आ रही थी। सब लड़के बहुत ही निराश हुए। "हो क्या सकता है?" उन्होंने पूछा। "हमने तो सभी हिदायतों का ध्यान से पालन किया है, या नहीं किया है?"

"मैं कुछ नहीं जानता," मीश्का ने कन्धे उचकाते हुए उत्तर दिया।

अकेला मैं ही जानता था कि क्या हुआ है। जिस रात मैं असावधानी से सोता रह गया था, भ्रूण बेशक उसी रात को नष्ट हो चुके थे। ताप नीचा हो गया था और वे ठण्ड से मर गए थे – अपनी ज़िन्दगी के ठीक से शुरू होने से पहले ही। सबके सामने मैंने अपने-आप को अपराधी अनुभव किया। उनकी सारी मुसीबतें बेकार जाएँगी और यह सब बस मेरे कारण! लेकिन मैं उनको यह सब बता नहीं पाया। मैंने फैसला किया कि मैं सारा दोष बाद में मान लूँगा, जब लड़के इस घटना को भूल जाएँगे और चूज़े न पाने की बात उन्हें इतनी बुरी नहीं लगेगी।

उस दिन स्कूल में हम सब लोग बहुत ही उदास रहे। सब लड़के हमारी ओर इतनी हमदर्दी के साथ देख रहे थे मानो हम किसी की मौत का शोक मना रहे हों। और जब सेन्या बोब्रोव के मुँह से आदत के चलते हमारे लिए "चूज़ादीन" निकल गया, तब सभी उसके ऊपर टूट पड़े और कहने लगे कि उसे खुद पर शर्म आनी चाहिए। मीश्का को और मुझे बड़ी परेशानी हुई।

"काश कि वे हमें कोसते!" मीश्का बोला।

"और क्यों?"

"अच्छा, ज़रा सोचो कि उन्होंने हमारे लिए क्या-क्या किया है। हमसे नाराज़ होने का उन्हें पूरा-पूरा अधिकार है।"

स्कूल के बाद कुछ लड़के हमारे यहाँ आए, लेकिन जल्द ही उन्होंने आना बन्द कर दिया। सिर्फ क़ोस्त्या देव्यात्किन एक-दो बार आया। वही एक ऐसा था जिसने अब तक आशा नहीं छोड़ी थी।

"देखा," मीश्का ने मुझसे कहा। "अब सब लड़के हमसे नाराज़ हो गए हैं। और मैं पूछता हूँ, भला क्यों? हर कोई गलती कर ही सकता है।"

"लेकिन खुद तुम्हीं ने तो कहा था कि उन्हें नाराज होने का अधिकार है।"

"हाँ, है," मीश्का ने चिढ़कर उत्तर दिया। "और सो तुम्हें भी है। मैं जानता हूँ कि यह सब मेरा ही दोष है।"

"भला यह तुम्हारा दोष क्यों है? कोई भी तुम पर किसी बात का दोष नहीं लगा रहा। न ही इसमें तुम्हारा जरा भी कसूर है," मैं बोला।

"नहीं, यह मेरी ही गलती है। लेकिन तुम मुझ पर बहुत गुस्सा तो नहीं होगे न, बोलो?"

"भला क्यों?"

"मैं इतना निकम्मा जो हूँ! यह सब मेरी बदकिस्मती के कारण है। कुछ करूँ, उसका कभी कुछ अच्छा नतीजा न निकलेगा।"

"यह ठीक नहीं है। मुझसे ही हर बात बिगड़ जाती है," मैंने कहा। "यह सब मेरा ही कसूर है।"

"नहीं, तुम्हारा दोष नहीं है। गलती मेरी ही है। मैंने ही चूज़ों को मारा है।"

"तुम उन्हें कैसे मार सकते हो?"

"मैं तुम्हें बता दूँगा, लेकिन पहले मुझ पर नाराज़ न होने का वचन दो," मीश्का बोला। "एक बार मुझे सुबह-सबेरे नींद आ गई और जब मैं जागा और तापमापी की ओर देखा, तो पारा 40 डिग्री पर था। मैंने अण्डों को ठण्डा करने के लिए तुरन्त ढक्कन खोल दिया, लेकिन मेरे ख्याल से बहुत देर हो चुकी थी।"

"यह कब की बात है?"

"पाँच दिन पहले की।"

मीश्का अपराधी तथा दुखी लग रहा था।

"खैर, तुम चिन्ता न करो," मैंने उससे कहा। "अण्डे उससे पहले ही खराब हो चुके थे।"

"किससे पहले?"

"उस दिन, तुम्हारे ज़्यादा देर तक सोए रहने से पहले।"

"किसने खराब किया उन्हें?"

"मैंने।"

"तुमने? कैसे?"

"मैं ज्यादा सो गया और ताप नीचे चला गया और अण्डे खराब हो गए।"

"यह कब हुआ?"

"दसवें दिन।"

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया?"

"मुझे कबूल करते डर लग रहा था। मैंने सोचा कि शायद चूजे न ही मरे हों, लेकिन अब मैं जानता हूँ कि वे मर गए थे और मैंने ही उन्हें मारा है।"

"और तब भी तुमने लड़कों से वह सारा काम बेकार करवाया", मेरी तरफ गुस्से से देखते हुए मीश्का ने कहा, "सिर्फ इसलिए कि कबूल करते तुम्हें डर लगता था।"

"मैंने सोचा था कि शायद सब-कुछ ठीक ही निकल आएगा। और लड़के किसी भी हालत में काम जारी रखने का ही निश्चय करते, नहीं तो हमें कभी पता न चलता कि चूजे मरे हैं या नहीं।"

"अच्छा, जारी रखने का ही निश्चय करते!" मीश्का ने क्रोध से कहा। "कुछ भी हो, तुम्हारा फर्ज था कि शुरू में ही सब कुछ बता देते। बजाय इसके कि तुम सबकी तरफ से फैसला कर लो, हम सब मिलकर सोच-विचार करके फैसला लेते।"

"देखो," मैं बोला। "मेरे ऊपर क्यों बिगड़ रहे हो? तुमने खुद अपनी बात पहले क्यों नहीं बतायी? तुम भी तो ज्यादा सोए न, या नहीं?"

"हाँ, सोया," मीश्का ने पश्चाताप के स्वर में कहा। "मैं सचमुच सूअर हूँ। चाहो तो मेरी नाक पर मुक्के मार लो।"

"मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला। लेकिन देखना, मैंने जो कुछ तुम्हें बताया है, वह जाकर दूसरों से मत कह देना।" मैं बोला।

"मैं कल उन्हें बता दूँगा। तुम्हारे बारे में नहीं, खुद अपने बारे में। हर किसी को मालूम हो जाए कि मैं कैसा सूअर हूँ। मेरी यही सज़ा होगी।"

"ठीक है, तब मैं भी कबूल कर लूँगा," मैंने कहा।

"नहीं, तुम ऐसा मत करना।"

"क्यों?"

"देखो, तुम जानते हो कि वे कैसे लोग हैं। वे हम पर हँसते हैं, क्योंकि हम हर काम मिलकर करते हैं।

हम स्कूल साथ-साथ जाते हैं, अपने पाठ साथ-साथ तैयार करते हैं, और कम नम्बर भी साथ-साथ ही पाते हैं। अब वे कहेंगे कि निगरानी करते हुए, ज्यादा सो जाने में भी हमने एक-दूसरे का साथ दिया है।"

"वे जो चाहें कहें," मैंने कहा। "अलावा इसके क्या यह हो सकता है कि वे तुम्हारी खिल्ली उड़ाएँ और मैं खड़ा-खड़ा देखता रहूँ?"

आशा टूट जाने के बाद

वह दुख भरा दिन समाप्त हुआ और फिर शाम घिर आई। रसोई-घर की हालत में कोई फर्क नहीं आया। इन्क्युबेटर गरम था, लैम्प अभी भी जल रहा था, लेकिन हमारी आशाएँ खत्म हो चुकी थीं। मीश्का उसे अपने हाथ में लिए अण्डे की ओर टकटकी लगाए चुपचाप बैठा था। हम निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें। उसको तोड़कर देख लें या कुछ देर और इन्तज़ार करें। यकायक मीश्का चौंक उठा और मेरी तरफ फटी-फटी आँखों से देखने लगा। मैंने सोचा कि उसने मेरे पीछे कोई भूत देखा है और इसलिए मैंने जल्दी से घूमकर देखा। लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था। मैं फिर मीश्का की ओर मुड़ गया।

"देखो!" उसने अपना अण्डेवाला हाथ मेरी तरफ बढ़ाते हुए फटी हुई आवाज में कहा।

पहले तो मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दिया, लेकिन फिर एक जगह पर बाल-जैसी कोई चीज नजर आई।

"तुमने इसको किसी चीज से टकराया तो नहीं?" मीश्का ने सिर हिलाकर इंकार किया।

"तो....तो क्या चूज़े ने ऐसा किया है?" मीश्का ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"तुम्हें पक्का विश्वास है?" मीश्का ने कन्धे उचका दिए।

मैंने अपने नाखून से खोल के फटे हुए टुकड़े को सावधानी से ऊपर उठाया, जिससे अण्डे में एक छोटा-सा छेद बन गया। उसी क्षण एक नन्हीं -सी पीली चोंच ने अपने-आपको छेद में से निकाला और फिर गायब हो गयी।

हम इतने उत्तेजित हो गए कि मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाल सके। बस हमने एक-दूसरे को खुशी के मारे कसकर भींच लिया।

"भई वाह! हो गया!!" मीश्का चिल्लाया और ठहाका मारकर हँस पड़ा। "अब हम कहाँ की दौड़ मारें? सबसे पहले कहाँ जाएँ?"

"एक मिनट ठहरो!" मैंने कहा, "ऐसी क्या जल्दी है? कहाँ जाना चाहते हो?"

"हमें जल्दी से जाकर लड़कों को बताना है!" वह दरवाजे की तरफ भागा।

"ठहरो!" मैं बोला। "पहले अण्डे को तो वापस रखो। मेरे ख्याल से इसे तो तुम अपने साथ नहीं ले जा रहे, न!" मीश्का ने लौटकर अण्डे को इनक्युबेटर में रख दिया। इसी समय कोस्त्या अन्दर आया।

"हमें एक चूज़ा मिल भी गया!" मीश्का चिल्लाया।

"तुम झूठ बोल रहे हो!"

"नहीं भई, ईमान से।"

"कहाँ है वह?"

मीश्का ने इनक्युबेटर का ढक्कन उठाया और कोस्त्या ने अन्दर झाँका। "चूज़ा कहाँ है? यहाँ तो मुझे बस अण्डे ही नज़र आते हैं।"

मीश्का भूल गया था कि बाल पड़ा अण्डा उसने कहाँ रख दिया है और अब उसे वह अण्डा नहीं मिल रहा था। आखिर वह उसे मिल ही गया और उसने उसे कोस्त्या को बड़ी शान के साथ दिखाया।

कोस्त्या खुशी से चीख पड़ा, "देखो, देखो, इसमें से एक असली चूज़े की चोंच बाहर आ रही है!"

"हाँ, हाँ, वह असली है। क्या तुम यह समझे कि यह कोई सरकस का खेल या कुछ और है?"

"अच्छा देखो, तुम इस अण्डे को पकड़े रहो। मैं जाकर औरों को बुला लाता हूँ," कोस्त्या बोला।

"ठीक है। जाओ, उन्हें ले आओ। उनको विश्वास नहीं था कि एक भी चूज़ा पैदा होगा। सारी शाम किसी ने झाँका भी नहीं।"

"इस बात में तुम गलती पर हो। वे सब मेरे घर पर हैं, और उन्हें अभी भी चूज़ों के पैदा होने का विश्वास है। लेकिन वे तुम्हें परेशान नहीं करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मुझे यहाँ खबर लेने भेजा है।"

"वे झिझक क्यों रहे थे?"

"देखो, वे जानते थे कि तुम्हें इससे कितना बुरा लग रहा होगा और वे बीच में नहीं पड़ना चाहते थे।"

कोस्त्या बाहर भागा और हमने उसके एक साथ तीन-तीन सीढ़ियाँ लाँघने की आवाज़ें सुनीं।

"भई वाह!" मीश्का चिल्लाया। "मैंने अभी तक माँ को बताया ही नहीं!"

वह अपनी माँ को बुलाने दौड़ा। मैंने भी अण्डे को उठाया और अपनी माँ को दिखाने के लिए दौड़ा।

माँ ने अण्डा देखा और मुझसे तुरन्त जाकर इनक्युबेटर में रख देने के लिए कहा, ताकि अण्डा ठण्डा न पड़ जाए और चूज़े को सर्दी न लग जाए।

मैं वापस मीश्का के यहाँ दौड़ा और देखा कि रसोई-घर में मीश्का बेतरह बौखलाया हुआ है और उसके माँ तथा पिताजी हँस रहे हैं। मुझे देखते ही मीश्का मुझ पर झपट पड़ा, "तुमने देखा कि मैंने उस अण्डे को कहाँ रखा है? मैंने पूरा इनक्युबेटर छान डाला है, लेकिन मुझे वह कहीं नहीं मिला!"

"कौन-सा अण्डा?"

"तुम जानते हो... वह, जिसमें चूज़ा है!"

"यह रहा वह," मैंने कहा।

जब मीश्का ने मेरे हाथों में अण्डा देखा तो उसे जैसे दौरा ही पड़ गया। "बेवकूफ, गधे! अण्डे को लेकर भाग जाने का क्या मतलब?"

"छी, छी," मीश्का की माँ ने कहा। "एक अण्डे के पीछे इतना हंगामा!"

"लेकिन माँ, यह कोई मामूली अण्डा नहीं है। जरा देखो तो इसे!"

मीश्का की माँ ने अण्डे को उठाया और छेद में से नजर आने वाली नन्हीं-सी चोंच देखी। उसके पिताजी ने भी देखा। "हूँ...," मुस्कराते हुए उन्होंने कहा। "अनोखी बात है!"

"इसमें अनोखा कुछ नहीं है," मीश्का ने जरा शान भरे लहजे में कहा। "यह तो केवल एक प्राकृतिक घटना है।"

"तुम खुद भी तो एक प्राकृतिक घटना हो," मीश्का के पिताजी हँस पड़े। "चूजे में बेशक कोई अनोखी बात नहीं है। अनोखी बात यह है कि यह तुम्हारे बनाए इनक्युबेटर से निकला है। मैं मानता हूँ कि मैंने नहीं सोचा था कि इससे कुछ भी निकलेगा।"

"फिर आपने कुछ कहा क्यों नहीं?"

"मैं क्या कहता? रास्ते पर यूँ ही भटकते रहने की बजाय तुम्हारा इनक्युबेटर में लगे रहना मेरे लिए ज्यादा अच्छा था।"

इसी समय माया रसोई-घर में आयी। वह अभी-अभी सोकर उठी थी। हमने उसे अण्डे को एक-दो मिनट हाथ में लेने दिया। उसने छेद से अपनी आँख लगायी और तभी चूजे ने अपनी चोंच बाहर निकाली।

माया चीख पड़ी। "वह मुझे चोंच मारना चाहता है!" वह चिल्लायी। "ओ, नटखट नन्हे चूजे, अभी खोल से निकला भी नहीं और अभी से लड़ने को तैयार!"

"ऐसे नए जन्मे चूजे पर तुम्हें इस तरह चिल्लाना नहीं चाहिए!" मीश्का ने कहा। उसने अण्डे को लेकर फिर इनक्यूबेटर में रख दिया।

बाहर सीढ़ियों पर शोर और दौड़ते हुए पैरों की आवाज़ सुनाई दी। जल्दी ही रसोई-घर लड़कों से भर गया। अण्डे को फिर बाहर निकालकर सबको दिखाना पड़ा। हर कोई छेद में से चूजे को देखना चाहता था। "दोस्तो," मीश्का ने चिल्लाकर कहा, "अण्डा वापस दे दो। उसको इनक्युबेटर में तुरन्त रख देना चाहिए, नहीं तो चूजे को ठण्ड लग जाएगी।" लेकिन किसी ने भी मीश्का के कहने पर ध्यान नहीं दिया। हमें अण्डे को जबरन लेना पड़ा।

"दूसरे अण्डों में अब तक बाल नहीं पड़ा?" वीत्या ने पूछा। हमने बाकी अण्डों की जाँच-पड़ताल की,

लेकिन औरों में कहीं कोई निशान न था। "शायद बाद में उनमें भी हो जाए," लड़कों ने कहा।

"कोई बात नहीं," मीश्का ने कहा। "अगर सिर्फ एक ही चूजा पैदा हुआ, तो भी मुझे खुशी ही होगी। कम से कम हमारी मेहनत तो बेकार नहीं गयी!"

"क्या हमें अण्डे को तोड़कर चूजे को बाहर नहीं निकाल देना चाहिए?" सेन्या बोब्रोव ने पूछा। "अन्दर बैठे-बैठे उसे आराम नहीं मिलता होगा।"

"अरे नहीं," मीश्का बोला। "खोल को ज़रा-भी हाथ नहीं लगाना चाहिए। चूजे की खाल अभी बहुत नरम है और उसको चोट पहुँच सकती है।"

काफी समय बीतने पर ही लड़के आखिर वहाँ से गए। सब वहीं रहना और चूजे को खोल में से बाहर आते देखना चाहते थे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उनको घर लौटना था।

"कोई बात नहीं," मीश्का बोला। "यही कोई अकेला चूज़ा नहीं है। तुम देखोगे कि जल्दी ही और चूजे भी बाहर आएँगे।"

लड़कों के घर जाने के बाद मीश्का ने एक बार फिर अण्डों का निरीक्षण किया और उसे एक दूसरे अण्डे पर भी बाल नज़र आया।

"देखो, देखो," वह चीख पड़ा। "ग्यारहवें से भी चूज़ा निकल रहा है!"

मैंने देखा और सचमुच जिस अण्डे पर "। ।" लिखा हुआ था, उस पर बाल आ गया था।

"कैसी बुरी बात है कि लड़के घर चले गए," मैंने कहा। "अब इतनी देर हो गई है कि उनके पीछे जाना सम्भव नहीं।"

"हाँ, सचमुच बुरी बात है!" मीश्का बुदबुदाया। "लेकिन कोई हर्ज नहीं, कल वे बाहर निकले चूजे ही देख लेंगे।" हम इनक्युबेटर के पास बैठ गए। खुशी से हमारा दिल उमड़ रहा था।

"हम-तुम सचमुच किस्मत वाले हैं," मीश्का बोला। "मैं शर्त लगाकर कहता हूँ कि बहुत ही कम लोग हमारे जैसे खुशकिस्मत हैं।"

रात हो गई। सब लोग बहुत पहले ही सो चुके थे, लेकिन मीश्का और मुझे नींद ने जैसे छुआ ही नहीं।

समय तेज़ी से बीत गया। सवेरे लगभग दो बजे दो और अण्डों पर बाल आया – आठवें और दसवें पर। और अगली बार जब हमने इनक्युबेटर में देखा तो वहाँ एक सचमुच का आश्चर्य हमारा इन्तजार कर रहा था। अण्डों के बीच में एक नन्हा-सा नवजात चूज़ा बैठा था। वह अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन लुढ़ककर गिर-गिर जाता था।

मैं खुशी से फूला नहीं समाया। मैंने चूजे को उठाया। वह अब भी गीला था और उसकी कोमल गुलाबी पीठ पर परों की बजाय रेशमी पीले रंग के रोएँ चिपके हुए थे।

मीश्का ने बर्तन खोला और मैंने चूजे को अन्दर रख दिया। फिर नीचे के बर्तन में हमने गर्म पानी डाला, ताकि चूजा गर्म रहे।

"भीतर खासी गर्मी है, वह जल्दी ही सूख जाएगा और फिर सुन्दर तथा रोएँदार दिखने लगेगा," मीश्का बोला।

उसने इनक्युबेटर में से खोल के दोनों आधे टुकड़े निकाले। "कितने अचरज की बात है कि इतना बड़ा चूजा इस छोटे-से खोल में समाया हुआ था!"

और सचमुच ही खोल की तुलना में चूजा बहुत बड़ा दिखाई दे रहा था। लेकिन कवच के अन्दर आखिर वह दबा-सकुचा हुआ बैठा था। पैरों को अपने बदन के नीचे मोड़े हुए और गर्दन को घुमाए हुए। अब वह सीधा तन गया था तथा अपने पतले छोटे-से पैरों पर अपनी गर्दन ताने खड़ा था।

मीश्का टूटे हुए खोल की ओर देखते-देखते अचानक चीख उठा, "अरे देखो, यह तो गलत चूजा है!"

"गलत चूजा यानी?"

"अरे, यह पहले वाला नहीं है! सबसे पहले तो पाँचवाँ खोल ही तड़का था और यह ग्यारहवाँ है।"

खोल पर सचमुच ही "।।" लिखा हुआ था। हमने इनक्युबेटर में देखा। पाँचवाँ अण्डा जहाँ हमने रखा था वहीं पड़ा था।

"इसे क्या हो गया है?" मैं बोला। "सबसे पहले तो इसी ने खोल को तोड़ा था, और अब बाहर ही नहीं आता!"

"शायद यह इतना कमजोर है कि खोल को खुद नहीं तोड़ सकता," मीश्का बोला। "उसे जरा आराम करने दो। शायद वह कुछ ताकतवर हो जाए।"

हमारी गलती

हम काम में ऐसे लगे कि हमें सवेरा हो जाने का तभी पता चला जब हमने खिड़की में से चमकते हुए सूरज को देखा। सूरज की किरणें रसोई-घर के फर्श पर खेल रही थीं और कमरे को प्रकाशित और सुहावना बना रही थीं।

"तुम देखोगे कि लड़के अभी आते ही होंगे," मीश्का बोला। "उनसे जरा भी रुका न जाएगा।" मीश्का के मुँह से शब्द अभी निकले ही थे कि उनमें से दो आ भी गए – जेन्या और कोस्त्या।

"चमत्कार देखना चाहते हो?" मीश्का चिल्लाया और उसने बर्तन में से नवजात चूज़े को उठाया। "यह रहा प्रकृति का चमत्कार।"

लड़कों ने गम्भीरता के साथ चूज़े की जाँच की।

"तीन और अण्डों में बाल आ गया है," मीश्का ने अभिमान के साथ बताया। "देखो, ये हैं नम्बर पाँच, आठ और दस।"

चूज़े को ठण्ड बिलकुल अच्छी नहीं लग रही थी। हमारे हाथों में वह बेचैनी से कुड़बुड़ा रहा था, लेकिन बर्तन में रखते ही तुरन्त शान्त हो गया।

"तुमने उसे कुछ खिलाया-पिलाया भी है?" कोस्त्या ने पूछा।

"अरे नहीं," मीश्का बोला। "अभी वह खाने लायक नहीं हुआ। पैदा होने के एक दिन बाद ही उनको खिलाया जाता है।"

"तुम दोनों रात को बिलकुल नहीं सोए?" जेन्या ने प्रश्न किया।

"नहीं.... हम बहुत व्यस्त थे।"

"तो अब जाकर ज़रा सो जाओ। कुछ देर के लिए हम सम्भाल लेंगे," कोस्त्या ने सुझाव दिया।

"ठीक है। लेकिन वायदा करो कि अगर और कोई चूज़ा हुआ, तो हमें जगा दोगे।"

"निश्चय ही।"

मीश्का और मैं पलंग पर लेट गए और तुरन्त सो गए। सच कहूँ, तो मुझे बहुत देर से नींद आ रही थी। लड़कों ने हमें करीब दस बजे जगा दिया। "आओ, और यह चमत्कार नम्बर 2 देख लो!" कोस्त्या ने चिल्लाकर कहा।

"चमत्कार नम्बर कितना?" मैं आधी नींद में बड़बड़ाया। मैंने आँखें खोलकर इधर-उधर देखा। रसोई-घर लड़कों से भर गया था।

"वह रहा!" वे चिल्लाए और उन्होंने बर्तन की ओर संकेत किया।

मीश्का और मैं उछलकर बर्तन के पास पहुँचे। उसमें अब दो चूज़े थे – एक रोएँदार, गोल-मटोल और दूसरा अण्डे की ज़र्दी की तरह पीला।

"ऐसा सुन्दर!"

"कैसा खूबसूरत है!" मैंने कहा। "लेकिन यह पहलेवाला ऐसा मरियल क्यों नजर आता है?" लड़के हँस पड़े।

"पहला चूज़ा वह है!"

"कौन-सा?"

"वही जो रोएँदार है।"

"नहीं, नहीं, वह नहीं है। वह तो यह दुबला-पतला है।"

"वह दुबला-पतला तो अभी-अभी पैदा हुआ है। पहला चूज़ा सूख गया है और इसीलिए वह रोएँदार है।"

"है न ज़ोरदार बात!" मैंने कहा, "तब तो दूसरा चूज़ा भी सूखकर ऐसा ही रोएँदार हो जाएगा?"

"बेशक।"

"यह दूसरा चूज़ा कौन-से नम्बर का है?" मीश्का ने पूछा। लड़के उलझन में पड़ गए।

"मेरा ख़्याल था कि तुम्हें मालूम है कि सब अण्डों पर नम्बर पड़े हुए हैं," मीश्का बोला।

"नहीं, हमने किसी नम्बर को नहीं देखा," कोस्त्या बोला।

"हम खोल से देख सकते हैं," मैंने कहा। "खोल अभी अन्दर ही है।"

मीश्का ने इनक्युबेटर में देखा और चीख पड़ा, "देखो, देखो! अन्दर दो और एकदम नए चूज़े हैं!"

हर कोई इनक्युबेटर की ओर झपटा। मीश्का ने सावधानी से दोनों नए चूज़ों को उठाया और हमें दिखाया। "यह रही असली बाज़ी!" मीश्का ने अभिमान से कहा।

हमने उनको अन्य दो चूज़ों के साथ गर्म बर्तन में रख दिया। अब हमारे पास चार चूज़े थे। वे गर्मी के लिए एक दूसरे से सटकर बैठे थे। मीश्का ने इनक्युबेटर में से टूटे हुए खोल निकाले और नम्बर देखे।

"नम्बर चार, आठ और दस," वह बोला। "लेकिन कौन-सा कौन है?"

सचमुच अब यह नहीं कहा जा सकता था कि वे किस-किस खोल से निकले हैं। लड़के हँसते रहे। "पाँचवाँ अभी भी इनक्युबेटर में ही पड़ा है।" मैंने कहा।

"हाँ," मीश्का बोला। "उसे क्या हो गया? मर तो नहीं गया?" हमने पाँचवाँ अण्डा बाहर निकाला और उसका छेद ज़रा खोलकर देखा। बच्चा चुपचाप अन्दर पड़ा हुआ था। उसने अपनी गर्दन हिलाई। "वाह, यह ज़िन्दा है!" हम चिल्लाए और उसको फिर से इनक्युबेटर में रख दिया।

मीश्का ने शेष अण्डों की भी जाँच-पड़ताल की। तब मालूम हुआ कि नम्बर तीन में भी बाल आ गया है। लड़कों ने ज़ोरों से तालियाँ बजायीं।

सारा वातावरण आनन्द से गूँजने लगा! थोड़ी देर बाद माया अन्दर आयी। हमने उसे चूज़े दिखलाए।

"यह बच्चा मेरा है!" रोएँदार चूज़े को छीनने की कोशिश करते हुए वह बोली।

"एक मिनट ठहरो," मैंने कहा। "छीनो मत। उसे कुछ देर गर्म बर्तन में रहना चाहिए, नहीं तो उसे ठण्ड लग जाएगी।"

"ठीक है, मैं उसे बाद में ले लूँगी। लेकिन मैं इस मोटे-ताज़े चूज़े को ही लूँगी। मुझे मरियल चूज़ा नहीं चाहिए।"

उस दिन रविवार था। स्कूल न होने के कारण लड़कों ने पूरा दिन मीश्का के रसोई-घर में ही बिताया।

कोई कुर्सी पर, कोई मेज पर, तो कोई स्टूल पर बैठा था। मीश्का और मैं सम्मान के स्थान पर, इनक्युबेटर के पास बैठे थे। दाहिनी तरफ, अँगीठी के पास था गर्म बर्तन जिसमें नवजात चूज़े रखे हुए थे। अँगीठी के ऊपर गरम पानी का बर्तन था, और खिड़की पर थीं पेटियाँ जिनमें चमकदार हरे रंग की जई उग आयी थी। लड़के हँसते, मज़ाक करते और रोचक कहानियाँ सुनाते रहे।

"तुम्हें पता लगा कि जिस दिन इन्हें निकलना चाहिए था, वे उसी दिन क्यों नहीं निकले?" एक लड़के ने पूछा। "तुम्हें शुक्रवार के दिन इनके होने की आशा थी, है ना?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों हुआ," मीश्का ने उत्तर दिया। "किताब में लिखा हुआ है कि वे इक्कीसवें दिन पैदा होते हैं और आज तो तेईसवाँ दिन है। हो सकता है कि किताब में गलत लिखा हो।"

"अगर किसी ने गलती की है, तो तुमने ही," ल्योशा बोला। "तुमने इनक्युबेटर में अण्डे कब रखे थे?"

"तीन तारीख को। उस दिन शनिवार था। मुझे अच्छी तरह याद है, क्योंकि अगले दिन रविवार था।"

"सुनो," जेन्या स्कवोर्त्सोव बोला। "कहीं पर कुछ गलती ज़रूर है। तुमने शनिवार के दिन अण्डों को अन्दर रखा और इक्कीसवाँ दिन शुक्रवार को हुआ।"

"वह ठीक कहता है," वीत्या स्मिर्नोव ने कहा। "अगर तुमने शनिवार को शुरू किया, तो इक्कीसवाँ दिन शनिवार को ही आना चाहिए। सप्ताह में सात दिन होते हैं और इक्कीस दिन का अर्थ है ठीक तीन सप्ताह।"

"सात तिया इक्कीस!" सेन्या बोब्रोव ने हँसते हुए कहा। "कम से कम पहाड़ों में तो यही है।"

"पहाड़ों में क्या है मैं नहीं जानता, लेकिन हमने तो यही हिसाब लगाया था," मीश्का गुस्से से बोला।

"तुमने कैसे गिना था?"

"मैं बताता हूँ," मीश्का बोला और अपनी उँगलियों पर गिनने लगा। "तीन तारीख को पहला दिन था, चार तारीख को दूसरा, पाँचवीं तारीख को तीसरा...."

उसने इसी तरह गिना और इक्कीसवाँ दिन शुक्रवार को आया।

सेन्या भी उलझन में पड़ गया। "यह तो विचित्र बात है। पहाड़ों के हिसाब से इक्कीसवाँ दिन शनिवार को होता है। और जब तुम उँगलियों पर गिनते हो तो वह शुक्रवार को आता है।"

"फिर से दिखाओ कि तुमने कैसे गिना," जेन्या ने कहा।

"देखो," मीश्का ने फिर से उँगलियों को मोड़ते हुए कहा। "शनिवार – तीन तारीख को पहला दिन, रविवार – चार तारीख को दूसरा दिन...."

"एक मिनट! तुम गलती कर रहे हो! अगर तुमने तीसरी तारीख को शुरू किया था तो तुम्हें वह दिन नहीं गिनना चाहिए।"

"क्यों?"

"क्यों कि वह दिन पूरा नहीं हुआ था। चार तारीख को वह पूरा हो गया। इसका मतलब है कि हमें चार तारीख से ही गिनना चाहिए।"

यकायक मीश्का और मैं पलक झपकते इसे समझ गए। मीश्का ने नए तरीके से गिनना शुरू किया और अब ठीक उत्तर निकाला।

"बेशक," वह बोला। "इक्कीसवाँ दिन कल ही था।"

"तब तो हर बात ठीक ही हुई," मैंने कहा। "हमने शनिवार की शाम को इनक्युबेटर में अण्डे रखे थे और पहला बाल शनिवार की शाम को ही नजर आया। ठीक इक्कीसवें दिन के बाद।"

"देखा, ठीक से गिनने पर कितनी परेशानी से बचा जा सकता है," वान्या लोज्किन ने कहा। सब हँस पड़े।

"ठीक बात है," मीश्का बोला। "अगर हमने यह गलती न की होती, तो हम काफी तकलीफ और परेशानी से बच जाते।"

जन्मदिन

उस दिन के ढलने तक गर्म बर्तन में दस चूज़े बैठे हुए थे। आखिरी चूजा नम्बर 5 ही था। वह किसी भी प्रकार अपने खोल से बाहर आने को तैयार न था और उसे बाहर आने में मदद देने के लिए हमने आखिर अण्डे का सिरा तोड़ दिया। अगर हमने ऐसा न किया होता तो वह अब भी वहीं बैठा रहता। दूसरे चूज़ों की तुलना में वह छोटा और दुबला था, शायद इसलिए कि वह खोल में इतनी ज्यादा देर तक रहा था।

शाम तक इनक्युबेटर में केवल दो अण्डे बाकी रह गए। वहाँ अकेले पड़े-पड़े वे बहुत उदास दिखाई दे रहे थे। उन पर अभी भी बाल का कोई निशान नहीं था। हमने इनक्युबेटर में लैम्प जलता रहने दिया, लेकिन उस रात भी वे नहीं फूटे। नवजात चूज़ों ने गर्म बर्तन में रात बड़े आराम से काटी और सबेरे हमने उनको नीचे फर्श पर रख दिया।

दस पीले रोएँदार गोले अपनी ताकत भर चीं-चीं कर रहे थे। वे अपनी छोटी-छोटी आँखें मिचमिचाते थे और तेज़ रोशनी से मुँह फेर लेते थे। कुछ अपने छोटे-से पैरों पर अच्छी तरह खड़े थे, तो कुछ अब भी लड़खड़ा रहे थे। कुछ तो दौड़ने की भी कोशिश करते थे, लेकिन इसमें वे उस्ताद नहीं थे। कभी-कभी वे फर्श के छोटे-छोटे धब्बों पर तथा फर्श की पट्टियों की कीलों के चमकीले सिरों पर अपनी नन्ही चोंचों से ठुकठुकाते थे।

"देखो, देखो, भूखों मरे जा रहे हैं," मीश्का चिल्लाया। हमने जल्दी से एक अण्डा उबाला, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और उसको जमीन पर बिखेर दिया। लेकिन चूजे नहीं जानते थे कि उसके साथ क्या करें। हमने उन्हें अपने हाथों से खिलाने की कोशिश की।

"खाओ भी पगले, खाओ," हमने कहा। लेकिन चूजों ने उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखा। इसी समय मीश्का की माँ रसोई-घर में आयीं।

"माँ, ये अण्डा तो खाते ही नहीं," मीश्का ने कहा।

"तुम उन्हें सिखाओ।"

"कैसे? हमने उनसे खाने को कहा, लेकिन वे हमारी बात सुनते ही नहीं।"

"चूजों को ऐसे नहीं सिखाया जाता। इसके लिए तुम्हें अपनी उँगली से फर्श को ठुकठुकाना चाहिए।"

मीश्का चूजों के पास बैठ गया और उसने अण्डे के चूरे के पास फर्श को ठुकठुकाया। चूजों ने खाने की तरफ चोंच मारती उँगली को ध्यान से देखा और उसकी नकल करने लगे। कुछ ही मिनटों में उन्होंने सारा अण्डा चट कर दिया। फिर हमने एक तश्तरी में पानी रख दिया। उन्होंने उसे भी पिया। अब की बार हमें उन्हें सिखाने की जरूरत नहीं पड़ी। फिर वे एक जगह इकट्ठा हो गए और हमने उनको गर्मी देने के लिए बर्तन में रख दिया।

उस दिन जब मारिया पेत्रोव्ना क्लास में आयीं, हम सब उन्हें यह खबर देने के लिए दौड़े कि चूजे निकल आए हैं। वे बहुत हैरान और खुश हुईं।

"तो आज तुम्हारे चूजों का जन्मदिन है," वे बोलीं। "बधाइयाँ!"

हम सब हँस पड़े और वीत्या स्मिर्नोव ने कहा, "हमें उनके जन्म की खुशी में पार्टी देनी चाहिए। आज ही हो जाए।" यह विचार सभी को बहुत पसन्द आया।

"हाँ, हाँ, पार्टी होनी ही चाहिए। मारीया पेत्रोव्ना, आप हमारे चूजों के जन्मदिन की पार्टी में आएँगी न?"

"धन्यवाद लड़को, मैं जरूर आऊँगी," मारिया पेत्रोव्ना ने हँसते हुए कहा। "मैं उनके लिए उपहार भी लाऊँगी।"

"हम सबको उनके लिए उपहार लाने चाहिए!" लड़कों ने एक साथ चिल्लाकर कहा।

स्कूल से घर आने पर मीश्का और मैं अधीरता से मेहमानों की राह देखने लगे। हम यह देखने को व्याकुल थे कि चूजों को किस तरह के उपहार मिलेंगे। पहले-पहल सेन्या बोब्रोव एक गुलदस्ता लेकर आया।

"यह किसलिए?" मीश्का ने पूछा।

"चूज़ों के लिए। यह मेरी ओर से उपहार।"

"चूज़ों के लिए फूल! वे फूल नहीं खा सकते न, या खा सकते हैं?"

"उनके लिए इनको खाना ज़रूरी नहीं है। वे इनको देखेंगे और सूँघेंगे।"

"भई वाह, कैसी सूझ है! मानो उन्होंने पहले कभी फूल देखे ही न हों।"

"बेशक नहीं देखे। इन्हें रखने के लिए मुझे एक गुलदान दो। तुम देखोगे कि ये कितने सुन्दर लगते हैं।"

हमने एक गुलदान में पानी डालकर उसमें फूल रख दिए। इसके बाद सेर्योजा और वादिक आए। वे दोनों स्नोड्रॉप फूल के गुच्छे लाए थे। "हर कोई फूल ही किसलिए ला रहा है?" मीश्का ने भौंहें चढ़ाकर पूछा।

"क्या हमारे उपहार तुम्हें पसन्द नहीं हैं?" वादिक ने बुरा मानकर कहा।
"उपहार की इस तरह नुक्ताचीनी करना अच्छा नहीं होता।"

हमने उनके फूल भी पानी में रख दिए। फिर वान्या लोज्किन आधा किलोग्राम जई का आटा लेकर आया। मीश्का शंकित-सा दिखाई देने लगा, "चूज़े शायद इसे न खाएँ।"

"हम कोशिश तो कर ही सकते हैं," वान्या बोला।

"नहीं, पहले मारिया पेत्रोव्ना से पूछना ज्यादा ठीक रहेगा।"

इसी समय मारिया पेत्रोव्ना आयीं वे समाचारपत्र में लपेटी कोई चीज़ लायीं थीं। खोलकर देखा तो उसमें दूध जैसी किसी चीज़ से भरी हुई बोतल थी।

"दूध!" मीश्का बोल उठा। "उनको दूध पिलाने की बात हमने कभी सोची ही नहीं थी!"

"यह दही है," मारिया पेत्रोव्ना बोलीं। "पहले कुछ दिनों के लिए उन्हें इसी की ज़रूरत है। तुम देखो कि वे इसको कितना पसन्द करते हैं।"

हगने चूज़ों को बर्तन से बाहर निकाला और तश्तरी में दही उड़ेल दिया। उन्होंने उसे बड़े चाव से पी लिया।

"यह है चूज़ों का असली उपहार!" मीश्का ने खुश होकर कहा। "हमें पता होना चाहिए कि चूज़ों के जन्मदिन की पार्टी में क्या ले जाना चाहिए।"

एक के बाद एक मेहमान आते रहे। वीत्या और जेन्या बाजरा लाए। इतने में ल्योशा कूरोच्किन चूज़ों के लिए एक झुनझुना लेकर दौड़ता हुआ आया।

"मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या लाऊँ। रास्ते में एक दुकान में मुझे ये झुनझुने नजर आए, सो मैं एक खरीद लाया।"

"क्या शानदार विचार है!" मीश्का ने व्यंग्य के साथ कहा। "चूज़ों के जन्मदिन के लिए एकदम सही भेंट!"

"मुझे क्या पता था कि क्या लाना चाहिए? और हो सकता है कि चूज़े इसे पसन्द ही करें।"

वह चूज़ों के पास लपक गया और उनके ऊपर झुनझुना बजाने लगा। उन्होंने दही पीना छोड़ दिया और ऊपर देखने लगे।

"देखा!" ल्योशा खुशी के मारे चिल्ला पड़ा। "उनको यह अच्छा लग रहा है!" सब लोग हँस पड़े।

"ठीक है," मीश्का बोला। "अब उन्हें आराम से खाने दो।"

मैंने मारिया पेत्रोव्ना से पूछा कि क्या हम चूज़ों को जई का आटा खिला सकते हैं। उन्होंने कहा कि वे किसी भी तरह का आटा खा सकते हैं, बशर्ते कि वह पका हुआ हो।

"आटे को कैसे पकाते हैं?" मीश्का ने जानना चाहा।

"उसी तरह जिस तरह हम दलिया पकाते हैं," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा।

मीश्का और मैं उसी समय दलिया पकाना चाहते थे, लेकिन इतने में एक और मेहमान आ गया – कोस्त्या देव्यात्किन।

"क्या तुम भी उपहार लाए हो?" लड़कों ने पूछ लिया।

"हाँ, हाँ," कोस्त्या ने उत्तर दिया और जेब में से दो कचौड़ियाँ निकालीं।

"कैसा मजेदार उपहार है!" लड़के हँसने लगे।

"जन्मदिन की पार्टियों में हमेशा ही कचौड़ियाँ मिलती हैं, या नहीं?" कोस्त्या बोला।

"इनमें क्या भरा हुआ है?" मीश्का ने सन्देह से पूछा।

"चावल।"

"चावल?" मीश्का चिल्लाया।

उसने कोस्त्या के हाथ से कचौड़ियाँ छीन लीं और उनमें से चावल निकालने लगा।

"ऐ, क्या कर रहे हो!" कोस्त्या बोला। "क्या तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा नहीं है?"

लेकिन मीश्का ने जवाब नहीं दिया। उसने चावल एक तश्तरी में डाले और चूज़ों के सामने रख दिए। उन्होंने उसपर सीधे चोंच चलाना शुरू कर दिया।

जब माया ने देखा कि हर कोई चूज़ों के लिए उपहार लाया है, तो वह अपने कमरे में गई और एक लाल फीता ले आयी। उसने उसके छोटे-छोटे टुकड़े किए और फिर हर चूज़े के गले में एक-एक लाल फीता बाँध दिया। हमने फूलों के गुलदान ज़मीन पर चूज़ों के नज़दीक रख दिए। फूलों, लाल फीतों और दही, चावल तथा ताज़े पानी की तश्तरियों को देखकर हमें सचमुच ही किसी जन्मदिन जैसा लगने लगा। कोस्त्या चूज़ों को घास खिलाना चाहता था, लेकिन मारिया पेत्रोव्ना ने कहा कि इतनी जल्दी उनको घास खिलाना ठीक नहीं है। हाँ, कल खिला सकते हैं।

चूज़ों के काफी खाने-पीने के बाद हमने उनके फीते निकाल लिए और उनको गर्म बर्तन में रख दिया। मारिया पेत्रोव्ना ने रसोई-घर के एक हिस्से में बाड़ा लगा देने की सलाह दी और उन्हें ठण्ड से बचाने के लिए गर्म पानी का एक बर्तन रखने के लिए कहा।

"सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि इनको देहात ले जाया जाए। यहाँ घर में बन्द रहने से वे बीमार पड़ सकते हैं और मर सकते हैं। इन्हें ताज़ी हवा मिलनी चाहिए," मारिया पेत्रोव्ना बोलीं।

हमने उनको इनक्युबेटर और उसमें पड़े दोनों अण्डे दिखाए। "मुझे डर है कि इनमें से अब चूज़े निकलेंगे ही नहीं," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा। "लेकिन कोई बात नहीं। जो कुछ तुमने किया है, वही बहुत अच्छा है।"

"यह सब इसीलिए कि इन सब लड़कों ने इसमें हाथ बँटाया और हमारी मदद की," मीश्का बोला। "अकेले हम दोनों यह नहीं कर पाते।"

"मुझे तो डर था कि कुछ भी हाथ नहीं आएगा, क्योंकि एक बार मैं सो गया था और ताप नीचे चला गया था," मैंने कहा।

"ये थोड़े ठण्डे भी हो जाएँ, तो भी कुछ नहीं बिगड़ता," मारिया पेत्रोव्ना बोलीं। "भला मुर्गी अपने अण्डों पर सारा समय थोड़े ही बैठती है। दिन में एकाध दफा वह अण्डों को वैसे ही छोड़कर कुछ चारा-दाना लेने चली जाती है, जिससे भ्रूण के विकास के लिए कुदरती हालत बनी रहे। लेकिन हाँ, उनको ज़्यादा गर्मी पहुँचाना खतरनाक है।"

"मेरी भूल से एक बार उन्हें ज़्यादा गर्मी पहुँच गयी थी," मीश्का बोला। "ताप 40 डिग्री तक चला गया था।"

"बहुत ज़्यादा नुकसान होने से पहले ही तुम्हारा ध्यान उस पर चला गया होगा," मारिया पेत्रोव्ना ने कहा। "लेकिन अगर तुमने ताप बहुत समय तक ज़्यादा रहने दिया होता तो अण्डे सचमुच खराब हो जाते।"

उस शाम को हमने शेष दो अण्डों को तोड़कर देखा। दोनों में भ्रूण अविकसित रूप में थे। जीवन समाप्त हो गया था। चूज़े पैदा होने से पहले ही चल बसे थे। शायद यह ज़्यादा गर्मी पहुँचने का ही परिणाम था।

हमने लैम्प बुझा दिया। पूरे तेईस दिन तक वह बराबर जलता रहा था। तापमापी में पारा धीरे-धीरे नीचे आ गया। इनक्युबेटर ठण्डा हो गया। लेकिन अँगीठी के नज़दीक बर्तन में हमारा प्यारा कुनबा था – दस रोएँदार पीले चूज़े।

देहात की ओर

हमारा यह प्यारा कुनबा बड़े मज़े के साथ रह रहा था। चूज़े जब तक एक साथ होते, बड़े मज़े में रहते। लेकिन अगर उनमें से कोई भी औरों से ज़रा अलग हो जाता, तो वह अधीरता के साथ चिल्लाने लगता और अपने भाई–बहनों की खोज में इधर–उधर दौड़ने लगता और उन्हें पाए बिना शान्त न होता।

माया अपने चूज़े को शुरू से ही ले लेना चाहती थी। लेकिन हम उसे लेने नहीं देते थे। एक दिन उसने कह दिया कि वह अब ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करेगी और फिर उसने एक चूज़े को उठाया और अपने कमरे में ले गयी। आधे घण्टे में ही वह रोती हुई वापस आ गयी, "मुझसे नहीं सहा जाता। उसे रोते देखकर मेरा दिल टूट जाता है। मैंने सोचा था कि कुछ देर बाद वह आदी हो जाएगा, लेकिन वह इतनी बेबसी से रोता रहा कि मुझसे सहा नहीं गया!"

जैसे ही उसने चूज़े को फर्श पर छोड़ा, वह सीधे कोने में एक साथ सटे खड़े अपने साथियों की ओर लपक गया।

हमने रसोई–घर के एक कोने को बाड़ा बनाकर उनके लिए अलग कर दिया था। फर्श पर मोमजामे का एक टुकड़ा बिछा दिया था और उस पर बर्तन में गर्म पानी रख दिया था। इस बर्तन को हमने तकिए से ढँक दिया था, ताकि पानी जल्दी ठण्डा न हो जाए। चूज़े तकिए के नीचे गर्म बर्तन के चारों ओर आराम करते और ऐसे मज़े में रहते मानो वे अपनी माँ के पंखों के नीचे रह रहे हों। गर्म पानी के बर्तन ने माँ-मुर्गी की जगह ले ली थी।

कभी-कभी हम उनको बाहर खुले में ले जाते। लेकिन यह जगह उनके लिए खतरनाक थी – चारों तरफ आवारा कुत्तों और बिल्लियों की भरमार थी। इसलिए उनका ज़्यादा समय घर के भीतर ही कटता और हमें चिन्ता रहती कि उन्हें ताज़ा हवा काफी नहीं मिल रही है।

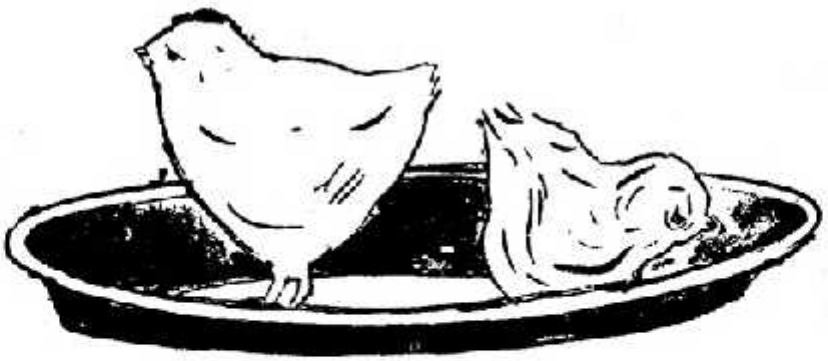

एक चूज़े की तो हमें खासकर बड़ी फिक्र थी। वह औरों से छोटा और कम चपल था। वह हमेशा सोच में पड़ा रहता था। औरों के साथ इधर-उधर मटरगश्ती करने की बजाय वह अक्सर अकेला ही एक जगह पर बैठा रहता। वह खाता भी बहुत कम था। यह नम्बर पाँच था, जो सबके बाद पैदा हुआ था।

"हमें सचमुच उनको देहात ले जाना चाहिए," मीश्का ने कहा। "मुझे डर है कि कहीं वे बीमार न पड़ जाएँ।"

लेकिन हमसे उनके बिछुड़ने की बात सहन नहीं होती थी और इसलिए हम इसे रोज़-रोज़ टालते जा रहे थे।

एक दिन सुबह रोज़ की तरह मीश्का और मैं चूज़ों को चुगाने के लिए आए। अब तक वे हमें पहचानने लगे थे और हमसे मिलने के लिए वे गर्म बर्तन के नीचे से लपके आते थे। उनके लिए हम तश्तरी भर बाजरे का दलिया लाए थे। वे एक-दूसरे को सामने से धकेलते हुए, एक-दूसरे के ऊपर से कूदते हुए, सब से आगे रहने की कोशिश करते हुए उस पर टूट पड़े। उनमें से एक तो अपने पंजों के बल तश्तरी पर ही आकर खड़ा हो गया।

"नम्बर पाँच कहाँ है?" मीश्का ने पूछा। नम्बर पाँच आम तौर पर औरों के पीछे ही रहता था। सबसे कमज़ोर होने के कारण उसे अलग धकेल दिया जाता था और हमें उसको अलग चुगाना पड़ता था। कभी-कभी तो वह कुछ भी नहीं खाता था। लेकिन सबके साथ वह दौड़ता अवश्य आता था। उसे अकेले छूट जाना पसन्द नहीं था। लेकिन इस समय उसका कहीं पता न था। हमने चूज़ों को गिना और देखा कि एक कम है।

"कहीं वह बर्तन के पीछे तो नहीं छिप रहा?" मैंने कहा।

मैंने बर्तन के पीछे झाँका तो देखा कि वह वहाँ फर्श पर पड़ा हुआ है। मैंने सोचा कि वह यूँ ही आराम कर रहा है। मैंने हाथ बढ़ाया और उसे उठा लिया। उसका नन्हा-सा बदन एकदम ठण्डा पड़ा हुआ था और उसका सिर उसकी पतली-सी गर्दन पर बेजान लटका हुआ था। नम्बर पाँच मर चुका था।

बहुत देर तक हम उसे देखते ही रहे। हमें इतना दुख हो रहा था कि हम बोल भी न सके।

"यह हमारा ही दोष है!" आखिर मीश्का बोला। "हमें उसे देहात ले जाना चाहिए था। वहाँ की ताज़ा हवा में वह अच्छा और मज़बूत हो जाता।"

पीछे के आँगन में एक पेड़ के नीचे हमने उसे दफना दिया। अगले ही दिन हमने बाकी सब चूज़ों को टोकरी में रखा और देहात की ओर चल दिए। सब लड़के हमें विदा करने आए।

चूज़े की विदाई के समय अपने चूज़े को चूमते हुए माया

बुरी तरह रो रही थी। उसे रख लेने की उसकी बड़ी इच्छा थी। लेकिन उसे डर था कि चूज़े को अपने नन्हे-नन्हे भाई-बहनों की याद आएगी। इसलिए उसने उसे देहात जाने दिया।

हमने टोकरी को दुशाले से ढँका और स्टेशन चले गए। टोकरी में चूज़े आराम और गर्माई में थे। सारे रास्ते वे हलकी आवाज़ में चीं-चीं करते एक-दूसरे से बातें करते शान्त बैठे रहे। चूज़ों की चीं-चीं सुनकर यात्री हमारी ओर कौतुहल से देखने लगे और भाँप गए कि हमारी टोकरी में क्या है।

"आ गए, मेरे नन्हे मुर्गी-पालक! और अण्डे लेने आए हो न?" हमें देखकर नताशा मौसी ने हँसकर कहा।

"जी नहीं," मीश्का ने कहा। "उलटे हम आपके लिए कुछ चूज़े लाए हैं।"

नताशा मौसी ने टोकरी में झाँककर देखा।

"भई वाह!" वे चहकीं, "इतने सारे चूज़े तुम कहाँ से लाए?"

"हमने इन्हें अपने इनक्युबेटर से पैदा किया है।"

"क्या मज़ाक कर रहे हो! तुम इन्हें चिड़ियों की किसी दुकान से खरीदकर लाए हो।"

"नहीं, नताशा मौसी। महीने भर पहले हमें दिए अण्डों की याद है? तो हम उन्हें ही वापस लाए हैं, लेकिन अब वे चूज़े हो गए हैं।"

"भई, क्या कहूँ!" नताशा मौसी ने कहा। "तो बड़े होकर तुम मुर्गी-पालक या ऐसे ही कुछ और बनोगे।"

"अभी तो हमें भी मालूम नहीं," मीश्का ने कहा।

"लेकिन चूज़ों से अलग होते तुम्हें दुख नहीं हो रहा?"

"हमें बहुत रंज है," मीश्का ने उत्तर दिया। "लेकिन बात यह है कि शहर में रहना उनके लिए ठीक नहीं है। यहाँ वे बड़े होकर अच्छे मज़बूत पंछी हो जाएँगे। मुर्गियाँ तुम्हें अण्डे देंगी और मुर्गे बाँग देंगे। एक चूज़ा मर गया था और हमने उसे पेड़ के नीचे दफना दिया।"

"बेचारे!" नताशा मौसी मीश्का को और मुझे अपनी ओर खींचते हुए बोलीं। "कोई बात नहीं। यह किसी के बस की बात नहीं है। बाकी सब तो बढ़िया हट्टे-कट्टे हैं।"

हमने चूज़ों को टोकरी से निकाल दिया और उन्हें धूप में मज़े से खेलते हुए देखते रहे। नताशा मौसी ने कहा कि उनकी एक मुर्गी अण्डे से रही है, सो मीश्का और मैं उनके साथ उसे देखने के लिए बाड़े में गए। वह एक टोकरी में

बैठी थी, जिसके सब तरफ से भूसा निकल रहा था। उसने घूरकर हमारी ओर देखा, मानो उसे डर लग रहा हो कि हम उसके अण्डे लेने आए हैं।

"यह अच्छी बात है," मीश्का ने कहा। "अब हमारे चूजों को खेलने के लिए साथी भी मिल जाएँगे। वे खूब मजे करेंगे।"

सारा दिन हमने देहात में बिताया। हम जंगल में नदी के किनारे सैर करते रहे। आखिरी बार जब हम यहाँ आए थे, तब बसन्त की शुरुआत थी और खेत अभी भी कोरे थे। उस समय ट्रेक्टर खेतों में ज़मीन को खोद रहे थे। अब खेत हरे-भरे पौधों से ढँके थे और जहाँ तक नजर जाती थी, एक विशाल हरा कालीन-सा फैला दिखाई देता था।

जंगल बड़ा सुन्दर लग रहा था। वहाँ तरह-तरह के गुबरैले और कीड़े-मकोड़े घास पर रेंग रहे थे। चारों ओर तितलियाँ फड़फड़ा रही थीं और पेड़ों पर पंछी गा रहे थे। सब कुछ इतना सुन्दर था कि घर जाने को मन नहीं करता था। हमने निश्चय किया कि गर्मियों में हम यहाँ फिर आएँगे। नदी के किनारे तम्बू लगाएँगे और उसमें रॉबिनसन क्रूसो की तरह रहेंगे।

लेकिन आखिर जाने का समय आ ही गया। हम विदा लेने के लिए नताशा मौसी के पास गए। उन्होंने हम दोनों को ट्रेन में खाने के लिए एक-एक केक दिया और हमसे वायदा करवाया कि गर्मियों की छुट्टी में हम उनके पास ही आकर रहेंगे। विदा होने से पहले हम चूजों को आखिरी बार देखने के लिए पिछवाड़े के बाड़े में गए। लगता था कि वे वहीं रम गए थे और मजे से चीखते हुए पेड़-पौधों में दौड़ रहे थे। लेकिन अभी भी वे साथ-साथ ही रहते थे और चहचहाते जाते थे। शायद इसलिए कि अगर उनमें से कोई घास में भटक जाए, तो वह औरों को आसानी से पा सके।

"अच्छा, प्यारे चूजो, हम चलें!" मीश्का ने कहा। "खुली हवा और धूप में खूब खेलो-कूदो, बड़े और बलवान बनो और बढ़िया पंछी बनो। हमेशा साथ रहो और एक-दूसरे की मदद करो। याद रखो, तुम सब भाई-भाई हो, एक ही माँ... यानी एक ही इन्क्युबेटर के बच्चे। जब तुम सीधे-सादे अण्डे थे, तब एक साथ पड़े हुए थे और न दौड़ सकते थे, न बोल.. यानी चहक सकते थे। और... और हमें भूल न जाना। बस!"

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास करना जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं - मासिक बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक*, विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर *स्रोत* तथा शैक्षिक पत्रिका *संदर्भ*। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

इन्क्युबेटर गरम था, लैम्प अभी भी जल रहा था, लेकिन हमारी आशाएँ खत्म हो चुकी थीं। मीश्का हाथ में अण्डे को लिए उसकी ओर टकटकी लगाए चुपचाप बैठा था। हम निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें। उसको तोड़कर देख लें या कुछ देर और इन्तज़ार करें। यकायक मीश्का चौंक उठा और मेरी तरफ फटी-फटी आँखों से देखने लगा।...

पहले तो मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दिया, लेकिन फिर एक जगह पर बाल-जैसी चीज़ नज़र आई।

"तुमने इसको किसी चीज़ से टकराया तो नहीं?"

"तो...तो क्या चूज़े ने ऐसा किया है?"

ISBN: 9788187171676
9 788187 171676

एकलव्य

मूल्य: 40.00 रुपए

A0118H